निवेदन

हम आपसे यह नम्र निवेदन करते हैं कि यदि आप भारत की तरक्की चाहते हें तो कृपया निम्न बातों के बारे में सोचें व उसके बारे में अपने परिचितों से भी चर्चा करें और कोई एक समस्या को लेकर कोई ठोस कार्यक्रम बनायें ताकि वह समस्या हल हो जाये। यदि आप यह सब न कर पायें तो कृपया कोई अच्छा काम रहा हो, उसकी सहायता करें। यदि नहीं सहायता कर पायें, कोई बात नहीं, उसकी योजना में रोड़ा न बनें। यदि आपका कोई उस योजना से अहित नहीं हो रहा हो व्यक्तिगत रूप से। भारत के बारे में आशाजनक बातें करें व सोचें कि भविष्य में आप कैसे उन्नत भारत को देखना चाहते हैं तथा सच मानिये यह सपने आपके जरूर सच होंगे।

- यदि आप शहर में रहते हैं तो एक ग्रामीण परिवार से, जो आपका रिश्तेदार न हो, सम्पर्क बनायें। कारण? यदि हम ग्रामीणों की समस्यायें समझेंगे ही नहीं तो उन्हें दूर कैसे करेंगे। गांव के रहने वालों ने यह साबित कर दिया है कि वह 100 करोड़ लोगों के लिए भी अन्न व दूध का उत्पादन कर सकते हैं। पर हम शहरों में रहने वालों ने उन्हें क्या दिया है अब तक। क्या हम नहीं सोच सकते हैं जो हमारे पास है उन लोगों (ग्रामीणों) के पास भी हो, उपभोक्ता वस्तुयें। यदि हम उन्हें साथ लेकर आगे नहीं बढ़ेंगे तो देश का अधिकांश हिस्सा तो पीछे ही रह जायेगा।

- यदि आप ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं तो शहर जाकर कुछ सीखें और वह नई वस्तु या ज्ञान और ग्रामीणों को दें, न कि शहर में जाकर बस जायें और अपनी जड़ों को भूल जायें। अपने होशियार बच्चों को शहरों में क्लर्क बनने से रोकें। उनकी सूझबूझ पहले गांव व देश की उननति में काम आये।

- यह एक आह्वान है जिसके परिणाम बहुत दूर तक जायेंगे। यह सोच का विषय है। क्या स्कूल इसलिए होते हैं कि प्रतिभावान ग्रामीणों को शहर ले जाय नौकरियों के लालच में इसके बजाय उन्हें ग्रामीणों का व ग्राम का विकास करने के अभियान में लगाया जाये। सोचिये कैसा होगा यह विकास

- पढ़ाई जो शहरों में हो रही है महंगी है गांव या कुछ गांवों को मिलाकर (Cluster) में की जाये जो सस्ती होने के साथ नई व चुनौतीपूर्ण हो। पढ़ाई सिर्फ नौकरियों के लिए न हो। विश्वविद्यालय खोले जायें। हमारी यह धारणा है कि गांव का पैसा गांव में ही रहे और विकास भी हो।

- ज्यादातर नेता बेवकूफ होते हैं? (गधा स्टोरी) क्योंकि जो हम होशियार होते हैं पढ़ने व अपने-अपने व्यवसाय में, उनहें पॉलिटिक्स में भाग लेने का समय ही नहीं होता है तो इन नेता, जो किसी भी व्यवसाय में नहीं होते हैं, नेता बन बैठ जाते हैं और एक-दो समस्याओं को सुलझाकर उनके ठेकेदार बन जाते हैं कि हम अब किसी, भी समस्या का हल होने नहीं देंगे। समस्याओं को जितना बढ़ा सकते हैं बढ़ायें। IAS, IPS के लोग इन नेताओं का साथ भी देते हैं ताकि दोनों (नेता व नौकरशाही) अपनी-अपनी जगहों को बनाये रखें। जिस सरकार का गठन हमारे लिए हुआ था हमारी सेवा नहीं कर रही है।

- ग्रामीण इलाकों में गरीब होने का कारण है कि वहां से ज्यादा धन बाहर जाता है, कम धन गांव में

वापिस आता है।

- जब-जब फसल आती है अधिक से अधिक किसान अपनी-अपनी फसलों को एक ही समय में बेचने का प्रयत्न करते हैं। उससे उन्हें उनकी कीमत नहीं के बराबर मिलती है। कभी-कभी अपनी लागत भी नहीं मिलती। मेहनत के मुआवजे के बारे में सोचते भी नहीं हैं। इस बारे में यह विचारणीय है कि अगर हम अपनी फसल को अपने पास रोकने की शक्ति बढ़ायें या हम उनको छोटी इकाई के रूप में बजाय 100 कि0ग्रा0 उपभोक्ता को सीधे बेचें ताकि उन्हें अपनी फसलों का सही मूल्य मिल सके। गेहू की बजाय गेहूं का आटा बेचें। रोटी बनाकर बेचें। दाल साबुत के बजाय उनको दलकर बेचें, छोटे-छोटे पैकेटों में। चावल बेचें न कि धान इत्यादि। मतलब यह है कि कुछ लघु उद्योग-धन्धे गांव में भी लगायें ताकि यह धन गांवों से बाहर न जाए। गांवों में काम-धन्धे भी ग्रामवासियों को मिलें।

- गांव के स्कूल के बच्चों को सप्ताह में एक बार स्कूल के बाहर उनके परिवेश से जोड़ने वाले कार्यक्रमों में लगाया जाये ताकि वह अपनी समस्याओं को सुलझाने में दिमाग व समय लगा सकें। शहर के बच्चों को साल में एक या दो बार गांवों के स्कूल में ले जाया जाये व गांव के बच्चों को शहर के स्कूल दिखाये जायें। इससे दो बातें होंगी। एक तो शहर के बच्चों में गांव की समस्याओं के प्रति एक समझदारी जायेगी और गांव के बच्चे जब शहर के स्कूल देखकर अपने स्कूलों को भी अच्छा बनाने का प्रयास करेंगे व अपनी समस्याओं को भी सुलझाने की कोशिश करेंगे।

- एक नये विषय को स्कूलों में लाया जाये, वह है ''समस्याओं को सुलझाना'' यह पहले दर्जे से ही छोटे पैमाने पर सिखाया जाये।

- गांवों में टी0वी0 स्टेशन खोले जायें ताकि सामाजिक संस्कारों को और स्थानिक संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा और गांव-गांव में सम्भावनाएं पैदा होंगी। बेकारी को कम करने में मदद मिलेगी।

- गांवों में कॉलेज, यूनिवर्सिटीज खोली जायें ताकि नई संभावनायें पैदा हों।

- गांव में कम्पनियाँ बनाई जायें जो बिजली/पानी की जरूरतों को पूरा करें और इससे भी गांव का पैसा गांव में रहेगा।

—रश्मि उमेश रोहतगी
24161 नीलन ड्राईव नौवी(मि०) सं०रा०अ० 48374-3754
248-471-5786 e-mail : rurohatgi@yahoo.com
website : www.rurohatgi.com